प्रश्न: "मीडिया घरानों के बढ़ते कॉर्पोरेट स्वामित्व ने संपादकीय स्वतंत्रता को किस प्रकार प्रभावित किया है? 'क्रॉस मीडिया ओनरशिप' के खतरों पर प्रकाश डालें।"

यह एक अत्यंत गंभीर और समसामयिक विषय है।
मीडिया स्वामित्व और संपादकीय स्वतंत्रता: एक विश्लेषण
1. कॉर्पोरेट स्वामित्व और संपादकीय स्वतंत्रता पर प्रभाव:
जब मीडिया संस्थान किसी बड़े औद्योगिक घराने का हिस्सा बन जाते हैं, तो पत्रकारिता 'मिशन' के बजाय 'मार्केट' (व्यापार) बन जाती है। इसके मुख्य प्रभाव निम्नलिखित हैं:
* हितों का टकराव (Conflict of Interest): यदि कोई मीडिया संस्थान किसी ऐसे समूह का है जिसका निवेश सीमेंट, स्टील या ऊर्जा क्षेत्र में भी है, तो वह मीडिया संस्थान कभी भी अपने मालिक के उन व्यवसायों के खिलाफ खबर नहीं दिखा पाएगा।
* प्रायोजित पत्रकारिता: संपादकीय नीतियां अब 'जनहित' के बजाय 'कॉर्पोरेट हित' से तय होती हैं। इससे 'वॉचडॉग' (Watchdog) की भूमिका कमजोर होती है और 'लैपडॉग' (Lapdog) पत्रकारिता को बढ़ावा मिलता है।

* संपादक की संस्था का पतन: पहले संपादक का निर्णय अंतिम होता था, लेकिन अब 'मैनेजर' और 'सीईओ' तय करते हैं कि कौन सी खबर चलेगी, जिससे संपादकीय स्वतंत्रता (Editorial Independence) लगभग समाप्त हो गई है।

2. क्रॉस मीडिया ओनरशिप (Cross Media Ownership) का अर्थ:

जब एक ही कंपनी या व्यक्ति मीडिया के विभिन्न रूपों (जैसे- समाचार पत्र, टीवी चैनल, रेडियो और डिजिटल पोर्टल) पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेता है, तो इसे क्रॉस मीडिया ओनरशिप कहते हैं।

3. क्रॉस मीडिया ओनरशिप के खतरे:

* सूचना का एकीकरण (Monopoly of Information): यदि एक ही व्यक्ति के पास अखबार और टीवी दोनों हैं, तो वह समाज को एक ही तरह की विचारधारा परोस सकता है। इससे विचारों की विविधता (Plurality of views) खत्म हो जाती है।

* लोकतंत्र के लिए खतरा: लोकतंत्र की मजबूती के लिए 'असहमति' आवश्यक है। क्रॉस मीडिया ओनरशिप असहमति के स्वरों को दबा देती है क्योंकि मीडिया के सभी माध्यम एक ही सुर में बात करने लगते हैं।

* विज्ञापन का दबाव: बड़ी कंपनियां अपने विज्ञापनों के जरिए मीडिया की सामग्री को नियंत्रित करती हैं। छोटे और स्वतंत्र मीडिया संस्थान इनके सामने टिक नहीं पाते।

* राजनीतिक सांठगांठ: कॉर्पोरेट घराने अपने व्यापारिक लाभ के लिए सत्ताधारी दलों के साथ गठबंधन कर लेते हैं, जिससे निष्पक्ष आलोचना की जगह केवल 'सॉफ्ट खबरें' या 'प्रचार' (Propaganda) ले लेता है।

निष्कर्ष

मीडिया स्वामित्व का केंद्रीकरण पत्रकारिता की विश्वसनीयता को संकट में डाल रहा है। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया और ट्राई (TRAI) ने समय-समय पर 'क्रॉस मीडिया ओनरशिप' पर सीमाएं लगाने की सिफारिश की है ताकि सूचना के प्रवाह को लोकतांत्रिक और स्वतंत्र बनाए रखा जा सके।